अन्तर्राष्ट्रीय विरोध का विश्लेषण
(Analysis of International Conflict)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में, जबकि कुछ विद्वान् तो केवल अन्तर्राष्ट्रीय विरोध का ही अध्ययन करते हैं तो कुछ अन्य विरोध के हिंसक उपवर्ग अर्थात् युद्ध के अध्ययन को अपना केन्द्र बनाते हैं। बहुत-से विद्वान् अन्तर्राष्ट्रीय विरोध को सामान्य रूप में विद्यमान, मानव-विरोध (Human Conflict) का एक उप-वर्ग मानते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में, अन्तर्राष्ट्रीय

वातावरण से अलग रह कर, विद्यमान विरोधों की समानताओं का अध्ययन कर अन्तर्राष्ट्रीय विरोध के विश्लेषण के लिए सामग्री इक्ट्ठा करने का प्रयास करते हैं।

जोसफ फ्रैंकल (Joseph Frankel) विरोध की परिभाषा उस स्थिति/सम्बन्ध के रूप में करता है जो तब पैदा होती है जब दो लोग या लोगों के दो समूह अथवा राज्य ऐसे कार्य करना चाहते हैं जो कि परस्पर विरोधी होते हैं। (Joseph Frankel conceptualises conflict as a situation/relation which emerges when two people or groups of people, including states, wish to carry out acts which are mutually incompatible.)

अधिकतम परिस्थितियों में विरोध में संलग्न समूह सोच-समझ कर विरोध में शामिल होना तथा किसी सहयोगी विकल्प की खोज अर्थात् विरोध समाधान की क्रिया करना अपना सकते हैं।

इस प्रकार एक विरोध-स्थिति वास्तव में तब उत्पन्न होती है जब विपरीत हित-उद्देश्यों वाले राज्य इनके समाधान का प्रयास करते हैं। परन्तु मतभेदों तथा विपरीत हितों की केवल विद्यमानता ही विरोध को उत्पन्न नहीं करती। विरोध तब उत्पन्न होता है जब विरोधी हितों/लक्ष्यों वाले राज्य इनका समाधान ढूंढने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रिया-प्रतिक्रिया की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रत्येक राज्य दूसरों की तुलना में लाभकारी स्थिति या फिर अपने प्रतियोगियों को असफल बनाने की स्थिति प्राप्त करना चाहता है तथा इसके लिए प्रयास करता है। विरोध-परिस्थिति में विरोधियों में सदैव हिंसक अथवा अहिंसक विनिमय होते हैं जिसमें प्रत्येक विरोधी दूसरे की तुलना में या फिर दूसरे को असफल बनाकर, अधिकतम लाभ प्राप्त करने का प्रयास करता है। (Conflict situation involves exchanges violent or non-violent between the opponents by which each opponent tries to maximise its advantages to the exclusion of the other.)

सामाजिक विज्ञानों के बृहद कोष (Encyclopaedia of Social Sciences) में हैराल्ड एच. लासवैल (Harold H. Lasswell) ने विरोध की परिभाषा करते हुए लिखा है कि, "शब्द के व्यापक एवं विस्तृत रूप में विरोध एक चेतन प्रतियोगिता होती है जिसमें प्रतियोगी आत्म-चेतन विरोधी अथवा दुश्मन बन जाते हैं। पूर्ण रूप में अलग मूल्यों की प्राप्ति के चेतन प्रयासों से विरोध पैदा होता है। (In the widest sense of the word conflict is a conscious competition and competitors become self-conscious rivals or opponents. Conflict results from the conscious pursuit of exclusive values.)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में विरोध ही शक्ति के लिए संघर्ष की जड़ होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों की प्राप्ति करना चाहता है जिनमें कुछ तो दूसरे राष्ट्रों के हितों के समरूप होते हैं तो कुछ विरोधी। दोनों ही तरह के लक्ष्य विरोध को उत्पन्न कर सकते हैं। समरूपी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए होने वाली प्रतियोगिता विरोधपूर्ण हो सकती है और ग़ैर-समरूपी हितों की प्राप्ति की प्रक्रिया से तो स्वाभाविक और प्रत्यक्ष रूप में विरोध उत्पन्न हो जाता है।

प्रो. ए. वोल्फर (Prof. A. Wolfer) लिखता है कि, "जो लक्ष्य राष्ट्र प्राप्त करना चाहते हैं उनको दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : स्वामित्व/प्राप्ति लक्ष्य (Possesion goals) तथा वातावरणीय लक्ष्य (Milieu Goals)। पहले वर्ग में वे लक्ष्य आते हैं जो कि राज्य द्वारा मूल्यवान् समझे जाने वाली वस्तुओं की प्राप्ति अथवा वृद्धि के लिए होते हैं। उदाहरणतया भू-क्षेत्रीय सम्पत्ति के अधिकार, व्यापार अधिकार तथा शुल्क सुविधाएं आदि। यह विरोधपूर्ण लक्ष्य होते हैं क्योंकि सभी राज्य इनकी प्राप्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में प्रयास करते हैं। वातावरणीय लक्ष्य (Milieu Goals) वे होते हैं जिनकी प्राप्ति के लिए राज्य इस कारण प्रयास करते हैं, क्योंकि वे अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में वांछित परिवर्तन चाहते हैं। इनको सामूहिक तथा साझे रूप में प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इनका उद्देश्य अपनी प्राप्तियों अथवा सम्पत्ति को बढ़ाना अथवा इसकी सुरक्षा करना नहीं होता। इनको दूसरों की तुलना या फिर दूसरों को पछाड़ कर प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया जाता। इन्हें तो आपसी साझे लाभ की प्राप्ति के लिए दूसरे राज्यों के साथ मिलकर प्राप्त किया जाना होता है। इसी कारण ऐसा अभ्यास राष्ट्रों के मध्य सहयोग का स्रोत होता है।

इस प्रकार जब एक राज्य सम्पति/प्राप्ति उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य कर रहा होता है तो वह दूसरों के साथ विरोध में उलझा हुआ होता है और जब वह वातावरणीय लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास करता है तो दूसरों के साथ सहयोग की प्रक्रिया में संलग्न होता है। परन्तु ऐसा निष्कर्ष पूर्ण रूप में उचित तथा वैध नहीं है क्योंकि जब एक राज्य दूसरों के साथ सहयोग करके वातावरणीय लक्ष्यों की प्राप्ति की प्रक्रिया में संलग्न होता है, तो भी विरोध पैदा हो सकता है। ऐसा तब होता जब एक राज्य उन दूसरे राज्यों की इच्छाओं और भावनाओं की प्रति शंकित होता है जो कि वातावरणीय उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग करने का प्रयास कर रहे होते हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में राज्यों की गतिविधियां तथा कार्यवाहियां बहुत बार विरोध को उत्पन्न करती हैं।